क्वेश्चन, करेक्शन और कोटेशन से पुरुषार्थ में ढीलापन

आज बापदादा बेहद की फुलवारी को विशेष रूप से देख रहे थे कि हर एक फूल के अन्दर रूप, रंग और कितनी खुशबू है। रूप अर्थात् साकारी स्वरूप में नैन और चैन में अर्थात् चेहरे में ब्राह्मण-पन का व फरिश्ते-पन का श्रेष्ठ पार्टधारी आत्मा की स्मृति का नशा और खुशी प्रत्यक्ष रूप में कितनी दिखाई देती है? रंग अर्थात् निरन्तर बाप के संग का रंग अर्थात् सदा साथी बनने का रंग कितना चढ़ा हुआ है? खुशबू अर्थात् सदा रूहानी-वृत्ति और दृष्टि कहाँ तक अपनायी है? हर-एक में यह तीन विशेषतायें देखीं।

यह विशेषता देखते हुए एक और विचित्र विशेषता देखी। वह क्या देखी कि जिन विशेष फूलों में बापदादा की नज़र है, उमंग और उल्लास की झलक भी है, उम्मीदवार भी हैं, सर्व ब्राह्मण परिवार का स्नेह भी है, लक्ष्य भी बहुत श्रेष्ठ है और कदम भी तीव्रगति के हैं लेकिन अभी-अभी इसी रूप में दिखाई दे रहे हैं (जो वर्णन किया है)। कुछ समय के बाद बाप की नज़र में रहने वालों के ऊपर माया के रॉयल रूप की नज़र लगने के कारण रूप-रंग बदल जाता है। कदमों की तीव्रगति यथार्थ मार्ग के बजाय व्यर्थ मार्ग पर तीव्रगति से चल पड़ते हैं। फरिश्तेपन के नशे के बजाय और ईश्वरीय खुशी के बजाय अनेक प्रकार के नशे जो कि विनाशी नशे हैं, साथ-साथ साधनों के आधार पर जो प्राप्त हुई खुशी और नशे हैं उनमें मस्त हो जाते हैं। सदा बाप के संग के रंग के बजाय अर्थात् एक बाप का सहारा लेने के बजाय, समय-प्रति-समय आत्माओं को ही साकारी सहारा बना देते हैं अर्थात् संग के रंग में रंग जाते हैं। इसमें भी मैजॉरिटी बच्चों में एक बात दिखाई दी।

मैजॉरिटी इस ब्राह्मण जीवन के आदि में अर्थात् पहले-पहले जब बाप द्वारा बाप का परिचय, ज्ञान का खजाना प्राप्त होता है, अपने जन्म-सिद्ध अधिकार का मालूम पड़ता है, याद द्वारा अनुभव प्राप्त होता है, दु:ख, सुख में बदल जाता है, अशान्ति-शान्ति में बदल जाती है और भटकना बन्द हो, ठिकाना मिल जाता है। उस शुरू की स्थिति में बहुत अच्छे, तीव्र उमंग, उल्लास वाले, खुशी में झूमने वाले, सेवा में रात-दिन एक करने वाले, सम्बन्ध और शरीर की सुध-बुध भूले हुए, ऐसे फर्स्टक्लास सर्विसएबुल, नॉलेजफुल और पॉवरफुल स्वयं को भी अनुभव करते हैं और अन्य ब्राह्मण भी उनको ऐसे ही अनुभव करते हैं। लेकिन आदि के बाद फिर जब मध्य में आते हैं तो पुरुषार्थ से, अपनी सेवा से, खुशी और उमंग से सन्तुष्ट नहीं रहते। अपने आप से क्वेश्चन करते रहते हैं कि पहले ऐसा था अभी ऐसा क्यों, पहला जैसा उमंग कहाँ चला गया? पहले वाली खुशी गायब क्यों हो गई? चढ़ती कला के बजाय रूकावट क्यों हो गई? जबकि ज्ञान गुह्य हो रहा है, समय समीप आ रहा है, सेवा के साधन भी बहुत प्राप्त हो रहे हैं फिर भी पहले जैसा अनुभव क्यों नहीं होता? मैजॉरिटी का यह अनुभव देखा। अब इसका कारण क्या?

कारण यह है कि जब सेवा में और ब्राह्मण परिवार के सम्पर्क में व सेवा द्वारा जो प्रत्यक्ष फल प्राप्त होता है उसमें चलते-चलते कोई हद की पोज़ीशन में आ जाते हैं। कोई हमशरीक सर्विस साथियों व सम्पर्क में आने वाले अपने साथियों का ऑपोज़ीशन करने लग जाते हैं। कोई स्थूल सेलवेशन लेने में लग जाते हैं अर्थात् सेलवेशन के आधार पर सेवा और पुरुषार्थ करते हैं। कोई क्वेश्चन और करेक्शन करने लग जाते हैं और फिर कोई दूसरे की कोटेशन (उदाहरण) देने लग पड़ते हैं अर्थात् दूसरे के दृष्टान्त से अपना सिद्धान्त बनाने लग जाते हैं – इन पाँच में से कोई-न-कोई उल्टा मार्ग अपना लेते हैं। बाप ने कहा कि सदा तपस्वी बन करके अपने ईश्वरीय ब्राह्मणपन के, सर्वस्व त्यागी के पोज़ीशन में स्थित रहो। लेकिन हद की पोज़ीशन कि मैं सबसे ज्यादा सर्विसएबल हूँ, प्लैनिंग-बुद्धि हूँ, इनवेन्टर हूँ, धन का सहयोगी हूँ, दिन-रात तन लगाने वाला हूँ अर्थात् हार्ड-वर्कर हूँ या इन्चार्ज हूँ। ऐसे अनेक प्रकार के हद के नाम, मान और शान के उन उल्टे पोज़ीशन को पकड़ लेते हैं अर्थात् यथार्थ मंजिल से व्यर्थ मार्ग पर तीव्र गति से चल पड़ते हैं।

बाप ने कहा सैलवेशन आर्मी हो अर्थात् अन्य आत्माओं को सैलवेशन देने प्रति हो लेकिन हद की सैलवेशन कि यह साधन होगा तो सर्विस करेंगे, पहले साधन दो फिर सर्विस करेंगे। साधन भी सेवा-अर्थ नहीं, लेकिन अपने सुख के अर्थ मांगते हैं।

अगर यह किया जाए तो बहुत सर्विस कर सकता हूँ। एकस्ट्रा स्नेह, रिगार्ड दिया जाय, एकस्ट्रा खातिरी की जाए और विशेष नाम लिया जाय – इसी प्रकार के सैलवेशन के आधार पर अपना पुरुषार्थ करने लग पड़ते हैं इसलिये आधार गलत होने के कारण उन्हें अपनी उन्नति का अनुभव नहीं होता।

इसी प्रकार बाप ने कहा – माया से आपोजीशन करना है। लेकिन माया के तो मित्र बन जाते हैं अर्थात् आसुरी संस्कार रूपी आसुरी सम्प्रदाय के बजाय ईश्वरीय सम्प्रदाय अर्थात् एक-दो में आपोज़ीशन करते रहते हैं, यह ऐसा करता है तो मैं इससे भी ज्यादा करके दिखाऊं, यह सर्विसएबुल है तो मैं भी सर्विसएबुल हूँ। यह आगे है तो मैं पीछे क्यों? मैं गुप्त पुरुषार्थी हूँ, मुझे पहचानते नहीं और निमित्त टीचर से तो मैं ज्यादा सर्विसएबुल हूँ। टीचर से भी ऑपोज़ीशन करते हैं। तुम अनुभवी नहीं, मैं तो अनुभवी हूँ, तुम अनपढ़ हो, मैं पढ़ी हुई हूँ। ऐसे एक-दो में ऑपोज़ीशन करने से अपना सदाकाल का श्रेष्ठ पोज़ीशन गँवा देते हैं। आपस में ऑपोज़ीशन के कारण माया से ऑपोज़ीशन करने में कमज़ोर बन जाते हैं अर्थात् विजयी नहीं बन सकते हैं।

इसी प्रकार क्वेश्चन, करेक्शन और कोटेशन देने में तो बड़े होशियार, वकील और जज बन जाते हैं। बाप को करेक्शन देते रहते। अपने आपको छुड़ाने के लिये अर्थात् अपनी गलती को छिपाने के लिये कोटेशन देंगे। मेरे से बड़ा महारथी भी ऐसे करता है। इस समस्या पर फलाने को बापदादा ने ऐसा कहा था, इसलिये मैंने भी वह श्रीमत मानी। फलाने डेट की मुरली में यह बात कही गई है – उसी प्रमाण मैं यह कर रहा हूँ। समय और सरकमस्टान्सेज़ को नहीं देखते लेकिन शब्द पकड़ लेते हैं। इन्हीं भूलों के कारण एक भूल से अनेक भूलें बढ़ती जाती हैं। अलबेलेपन के संस्कार बढ़ते जाते हैं। पुरुषार्थ की गति तीव्र से मध्यम हो जाती है।

बाप ने कहा है कि मास्टर त्रिकालदर्शी अर्थात् तीनों कालों को जानने वाले हो। इस धारणा को अपनाने के कारण अपनी करेक्शन के बजाय दूसरों को करेक्शन करते रहेंगे। दूसरों की करेक्शन में बाप से कनेक्शन तोड़ देते हैं इसलिये शक्तिहीन होने के कारण उलझते रहते हैं। सुख-शान्ति व अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति का ठिकाना नज़र नहीं आता। परचिन्तन पतन की तरफ ले जाता है। समझा? इन बातों में आने के कारण जो आदि का नशा और खुशी का अनुभव होता है, यह खत्म हो जाता है इसलिये अपने आप को चेक करो कि इन पाँच में से कोई भी उल्टे व व्यर्थ मार्ग पर चलकर समय बरबाद तो नहीं कर रहे हैं? चेक करो और फिर अपने को चेन्ज करो तो फिर चढ़ती कला की ओर चल पड़ेंगे। ऐसा मैजॉरिटी आत्माओं का अनुभव बापदादा ने देखा।

अभी मेले का अन्त है तो अन्त में अन्तिम आहुति डालो अर्थात् सदाकाल के लिये अपने को समर्थ बनाओ। रिजल्ट तो सुनायेंगे ना? तो वर्तमान समय के पुरुषार्थियों का चलते-चलते रूक जाने का समाचार सुनाया। आगे से परिवर्तन-भूमि का परिवर्तन सदा साथ रखना। इसको कहेंगे मेला मनाना अर्थात् स्वयं को सम्पन्न बनाना। अच्छा!

ऐसे सेकेण्ड में स्वयं को दृढ़ संकल्प से परिवर्तन करने वाले, अपनी वृत्ति द्वारा वायुमण्डल को सतोप्रधान बनाने वाले और नज़र से निहाल करने वाले ऐसे बाप के सदा साथी, सहयोगी और शक्तिशाली आत्माओं को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।

कुमारियों के प्रति उच्चारे हुए अव्यक्त महावाक्य:-

सभी कुमारियों ने जो बाप से पहला वायदा किया हुआ है कि एक बाप दूसरा न कोई – वह निभाती हैं? इसी वायदे को सदा निभाने वाली कुमारी विश्व-कल्याण के अर्थ निमित्त बनती है। कुमारियों का पूजन होता है। पूजन का आधार है सम्पूर्ण पवित्र। तो कुमारियों का महत्व पवित्रता के आधार पर है। अगर कुमारी, कुमारी होते हुए भी पवित्र नहीं तो कुमारी जीवन का महत्व नहीं। तो कुमारीपन की जो विशेषता है उनको सदा साथ-साथ रखना, उसे छोड़ना नहीं। नहीं तो अपनी विशेषता को छोड़ने से वर्तमान जीवन का अतीन्द्रिय सुख और भविष्य के राज्य का सुख दोनों से वंचित हो जायेंगी। ब्रह्माकुमारी होते हुए भी

सुनेंगी, बोलेंगी कि अतीन्द्रिय सुख संगम का वर्सा है, लेकिन अनुभव नहीं होगा। जब सदा कुमारी जीवन का महत्व स्मृति में रखेंगी तो सफल टीचर व ब्रह्माकुमारी बन सकेंगी। जब ऐसा लक्ष्य है तो कुमारीपन की विशेषता के लक्षण सदा कायम रहें। चाहे माया कितना भी इस विशेषता को हिलाना चाहे तो भी अंगद के समान कायम रहें।

कुमारी निर्बन्धन तो हैं लेकिन डर रहता है कि कहीं कुमारी होते माया के वश नहीं हो जायें। अगर इस कारण को कुमारी मिटा देवें तो देखने की ट्रॉयल करने की जरूरत नहीं। दूसरी परिवर्तन करने की शक्ति चाहिए। कोई भी आत्मा हो, कैसी भी परिस्थिति हो लेकिन स्वयं को परिवर्तन करने की शक्ति हो तब ही सफल टीचर और सेवाधारी बन सकेंगी। सम्पूर्ण पवित्रता और परिवर्तन शक्ति इन दोनों विशेषताओं से सेवा, स्नेह और सहयोग में विशेष आत्मा बन सकेंगी। नहीं तो ट्रॉयल की लिस्ट में रहेंगी। सरेण्डर की लिस्ट में नहीं आ सकेंगी। इन दोनों विशेषताओं को कायम रखने वाली कुमारी ही गायन-पूजन योग्य होगी। अल्पकाल का वैराग्य नहीं, लेकिन सदाकाल का वैराग्य अर्थात् त्याग और तपस्या – तब कहेंगे विशेष कुमारी। अभी तो निमित्त को ध्यान रखना पड़ता है क्योंकि अभी तक विशेषता दिखाई नहीं है इसलिये सेवा रोकनी पड़ती है। कोई शिकायत किसी द्वारा न सुनी जाये तब ही कम्पलीट टीचर अथवा सौ ब्राह्मणों से उत्तम कन्या बन सकती हैं। अच्छा!

दीदी जी के प्रति अव्यक्त महावाक्य:-

कोई भी कमज़ोरी को मिटाने के लिये विशेष महाकाली स्वरूप शक्तियों का संगठन चाहिये जो अपने योग-अग्नि के प्रभाव से इस वातावरण को परिवर्तन करें। अभी तो ड्रामा अनुसार हर-एक चलन रूपी दर्पण में अन्तिम रिजल्ट स्पष्ट होने वाली है। आगे चल कर महारथी बच्चे अपने नॉलेज की शक्ति द्वारा हर-एक के चेहरे से उन्हों की कर्म-कहानी को स्पष्ट देख सकेंगे। जैसे मलेच्छ भोजन की बदबू समझ में आ जाती है, वैसे मलेच्छ संकल्प रूपी आहार स्वीकार करने वाली आत्माओं के वायब्रेशन से बुद्धि में स्पष्ट टचिंग होगी। इसका यन्त्र है बुद्धि की लाइन क्लियर। जिसका यह यन्त्र पॉवरफुल होगा वह सहज जान सकेंगे।

शक्तियों व देवताओं के जड़ चित्रों में भी यह विशेषता है, जो कोई भी पाप-आत्मा अपना पाप उन्हों के आगे जाकर छिपा नहीं सकती। आप ही यह वर्णन करते रहते हैं कि हम ऐसे हैं। तो जड़ यादगार में भी अब अन्तकाल तक यह विशेषता दिखाई देती है। चैतन्य रूप में शक्तियों की यह विशेषता प्रसिद्ध हुई है तब तो यादगार में भी है। यह है मास्टर जानी जाननहार की स्टेज अर्थात् नॉलेजफुल की स्टेज। यह स्टेज भी प्रैक्टिकल में अनुभव होगी, होती जा रही है और होगी भी। ऐसा संगठन बनाया है? बनना तो है ही। ऐसे शमा-स्वरूप संगठन चाहिए। जिन्हों के हर कदम से बाप की प्रत्यक्षता हो।

जो सदा बाप में लवलीन अर्थात् याद में समाये हुए हैं। ऐसी आत्माओं के नैनों में और मुख में अर्थात् मुख के हर बोल में बाप समाया हुआ होने के कारण शक्ति-स्वरूप के बजाय सर्व शक्तिवान् नज़र आयेगा। जैसे आदि स्थापना में ब्रह्मा रूप में सदैव श्रीकृष्ण दिखाई देता था ऐसे शक्तियों द्वारा सर्वशक्तिवान् दिखाई दे, ऐसे अनुभव हो रहा है ना? जो सदा बाप की याद में होंगे और मैं-पन की त्याग-वृत्ति में होंगे उन्हों से ही बाप दिखाई देगा। जैसे स्वयं मैं-पन भूले हुए हैं वैसे दूसरों को भी उन्हों का वह रूप दिखाई नहीं देगा, लेकिन सर्व शक्तिवान् का रूप दिखाई देगा। अच्छा!

वरदान:- सदा भरपूरता की अनुभूति द्वारा टेढ़े रास्ते को सीधा बनाने वाले शक्ति अवतार भव

सदा शक्ति के, गुणों के, ज्ञान के, खुशी के खजाने से भरपूर रहो तो भरपूता के नशे से टेढ़ा रास्ता भी सीधा हो जायेगा। अगर खाली होंगे तो खड्डा बन जायेगा और खड्डे में गिरने से मोच आयेगी। जो कमजोर और खाली होते हैं उन्हें संकल्पों की मोच आती है। शक्ति अवतार अर्थात् टेढ़े को सीधा करने का कान्ट्रैक्ट लेने वाले। ऐसा कान्ट्रैक्ट लेने वाले कभी यह नहीं कह सकते कि रास्ता टेढा है। अगर कोई गिरते हैं तो अटेन्शन की कमी है या बुद्धि भरपूर नहीं है।

स्लोगन:- रूहाब को धारण करने वाले ही रूहानी गुलाब हैं।